छात्र लम्बी लड़ाई के लिए कमर कस रहे थे। दो दिन में ही वि. वि. प्रशासन छात्रों के एकजुट विरोध से भयभीत हो उठा।

छात्रों की इस फिलहाली जीत से वि. वि. प्रशासन के नापाक मंसूबों को धूल चाटनी पड़ी है। लेकिन यदि छात्रों की चौकसी ढीली पड़ी तो फिर किसी हिटलरी फरमान का खतरा सिर पर मंडराने लगेगा। ऐसा नहीं है कि इस जीत से शिक्षा व्यवस्था में कोई बड़ा बदलाव हो जायेगा या जनविरोधी शिक्षा नीति की दिशा उलट जायेगी। यह जीत एक बार फिर यह याद दिलाती है कि मेहनतकशों के बेटों के सामने संघर्ष के अलावा और कोई रास्ता नहीं है, जिससे कि वह अपने दुखों से निजात पा सके।

इस आन्दोलन में छात्राओं की सक्रिय शिरकत महत्वपूर्ण रही। छात्राओं ने अपने छात्र साथियों के साथ जुलूस-प्रदर्शन में हिस्सा लिया ही, तमाम स्थानों पर छात्राओं ने अपने विद्यालयों में पहलकदमी ली। सोनीपत के हिन्दू कन्या महाविद्यालय की छात्राओं ने संघर्ष में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेने के साथ ही अपने महाविद्यालय में कक्षाओं का बहिष्कार किया और शहर में शानदार जुलूस निकाला।

इस विस्फोट ने भविष्य की दिशा को इंगित कर दिया है। यह आन्दोलन यह शिक्षा दे रहा है कि महंगी होती शिक्षा और लगातार घटते रोजगार के इस दौर में हमें भविष्य में होने वाले विस्फोटों के लिए खुद को अभी से तैयार करना होगा। नेतृत्वहीनता और स्वतःस्फूर्तता की स्थिति में आन्दोलन बिखर जाता है, एक अराजक भीड़ बनकर रह जाता है। इसलिए आज सबसे जरूरी है कि छात्रों को अपने भीतर से सही, स्पष्ट वैज्ञानिक विचाधारा से लैस क्रान्तिकारी छात्र नेतृत्व को पैदा करना होगा और क्रान्तिकारी छात्र संगठन खड़े करने होंगे।

अमित की जिन्दगी को किसका ग्रहण लग गया?

प्रवीण

अमित नहीं रहा। अमित पूनिया ने आत्महत्या कर ली। वह 16 वर्ष का था। वह जीना चाहता था। उसे नहीं जीने दिया गया। बड़े होकर बड़ा आदमी बनना है—एक ही रट। मां-बाप, नाते-रिश्तेदार, पास-पड़ोसी, सर-मैडम। एक ही रट—बड़ा आदमी बनना है। नहीं मैं बड़ा आदमी नहीं बनना चाहता। क्यों? आखिर क्यों? मुझे गणित नहीं आता। ट्यूशन कर लो बेटा। नहीं मैं गणित नहीं समझ सकता। क्यों? मैं जानता हूं मैं नहीं समझ सकता। पढ़ो बेटा बिना पढ़े तो काम नहीं चल सकता। मैं गणित नहीं पढ़ सकता। पढ़ो! नहीं। पढ़ो! नहीं। पढ़ो! नहीं। पढ़ो! नहीं पढ़ो! नहीं नऽऽहींऽऽ...यह लो तुम्हारी गणित और यह लो.....

अमित नहीं रहा। अमित पूनिया ने आत्महत्या कर ली। वह 16 वर्ष का था। वह जीना चाहता था। उसे नहीं जीने दिया गया।

यह किसी नाटक का दृश्य नहीं, बल्कि हमारे इर्द-गिर्द आये दिन ऐसी घटनायें घटती हैं। हम अखबार पढ़ते हैं। थोड़ी देर के लिए ये हमें परेशान करती हैं और कुछ समय बाद भूल जाते हैं। इधर पिछले कुछ वर्षों में ये घटनाएं तेजी से बढ़ी हैं। परीक्षा-परिणाम आने पर, प्रवेश न मिलने पर, टीचर की या मां-बाप की डांट खाने पर कुछ इसी रूप में आत्महत्याओं की खबरें आती हैं। आखिर वे कौन से कारण हैं कि ये किशोर जिन्दगी से इतना निराश हो जाते हैं और आत्मघाती रास्ते पर आगे बढ़ जाते हैं।

वह कौन है जो इन किशोरों को-युवाओं को, जो जीना चाहते थे, आत्महत्या करने के लिए मजबूर कर रहा है। वह कौन है जिसने इनकी जिन्दगी के उजाले को छीन लिया? वह कौन है जिसने नई पीढ़ी के सपनों, कल्पनाओं, आकांक्षाओं को कैद कर लिया है और जो उनके तर्क और विवेक पर हर क्षण प्रहार कर रहा है। वह कौन है जो इनके जीने की ललक पर तुषारापात कर रहा है। आखिर वह हत्यारा कौन है जो हमारी संवेदनाओं को मार रहा है कि अमित पूनिया की आत्महत्या को हम महज एक खबर के रूप में पढ़ जाते हैं और भूल जाते हैं कि उस हत्यारे की शिनाख्त करना कितना जरूरी है। भूल जाते हैं कि वह हत्यारा हमारे घर के पिछवाड़े भी घात लगाये बैठा है।

अमित का गणित पढ़ने में मन नहीं लगता था। हो सकता है उसकी संगीत में रुचि हो। वह कविता लिखना चाहता हो। उसे दुनिया की सैर करना पसन्द हो। उसकी बागवानी में रुचि हो। क्यों पढ़े वह गणित? और कौन बच्चा है जो राजी खुशी स्कूल सिर्फ पढ़ने जाता है। हमारी स्कूली पढ़ाई ही ऐसी है, जिसमें हर विषय को इतना गूढ़, वायवीय, अपठनीय बना दिया जाता है। परीक्षा प्रणाली ऐसी है कि यदि आप परीक्षा में अव्वल स्थान नहीं प्राप्त करते तो आप नकारा हैं, कूड़ा हैं। शिक्षा को पूरी तरह से जीवन से काट रखा है। छात्र रोचक विषयों को भी तोते की तरह रटने के लिए अभिशप्त हैं।

किसी छात्र से पूछा जाये कि वह क्यों पढ़ना चाहता है तो उसका उत्तर होगा—एक अच्छी नौकरी के लिए, बड़ा आदमी बनने के लिए। बड़ा आदमी—यानी गाड़ी, बंगला और ढेर सारा पैसा। वह किशोर आपको बतायेगा कि यदि आपके पास पैसा है, तो जमाने में आपकी इज्जत है, आप जी सकते हैं, नहीं है तो कुछ भी नहीं। वह गुनगुनाता है 'दुनिया जाये भाड़ में, ऐश करो तुम'।

कहां से आ रही है यह सोच जो छात्रों को लालची, स्वार्थी, आत्मकेन्द्रित, खुदगर्ज, संवेदनशून्य बना रही है।

हमारी शिक्षा व्यवस्था का लक्ष्य बेहतर इंसान तैयार करना नहीं है। शिक्षा व्यवस्था के केन्द्र में इंसान नहीं है। आम जनता के बच्चों के लिए जो शिक्षा व्यवस्था है उसका लक्ष्य है ऐसे यंत्र मानव तैयार करना जो मालिकों के स्वामिभक्त सेवक हों। शिक्षा व्यवस्था हमें क्लर्क बनाती है—मालिकों की खाता-बही दुरुस्त रखने को। हमें सेल्समैन बनाती है—मालिकों के कारखानों में बन रहे सामान को बेचने के लिए। हमें मास्टर बनाती है—सेवकों की अगली पीढ़ी तैयार करने के लिए। हमें कलमघसीट भी बनाती है—ताकि मालिकों के अखबारों मं हम ऐसी खबरें लिखें जो उनको भाये। हमें सिपाही, फौजी बनाती है—मालिकों की रक्षा के लिए। और बहुत कुछ बनाती है—क्योंकि मालिकों की लूट की मशीनरी को ढेर सारे कलपुर्जों की जरूरत होती है। मालिकों को अनपढ़ सेवकों की भी जरूरत होती है तो हमारे देश में "आजादी" के करीब 55 साल बाद भी 60 प्रतिशत से ऊपर जनता अशिक्षित है।

हमारे मालिक दून स्कूलों में पढ़ रहे हैं जहां से निकलकर वे उद्योगपति-नौकरशाह-जज-जेलर-अफसर-प्रोफेसर सब कुछ बनेंगे। हमारे मालिक इसलिए हमारे मालिक बनेंगे क्योंकि वे मालिकों के खानदान में पैदा हुए। कभी-कभी मालिकों के कुत्ते, हमारे बीच के गद्दार भी हमारे मालिक बन जाते हैं। मालिक ही हमारी शिक्षा व्यवस्था तय करते हैं। अपने वफादार सेवकों से कहते हैं कि लोकतांत्रिक ढंग से इसे लागू करो। और फिर नई-नई शिक्षा नीतियां बन जाती हैं। मालिक सेवकों से कहते हैं कि खूब मेहनत से सेवा करो, एक दिन तुम भी बड़े आदमी बन जाओगे। हम जिन्दगी भर मेहनत करते हैं 'कर्मण्येवा धिकारस्ते मा फलेषु कदाचनम' का जाप करते हुए। वे उन अपवादों को हमारे सामने नमूने के तौर पर पेश करते हैं जो हमारे बीच से हमारे कंधों पर चढ़कर उनके बगलगीर बन जाते हैं। उनके जैसा बन जाने की मृग-मरीचिका हमें कोल्हू का बैल बना देती है।

अमित कोल्हू का बैल नहीं बनना चाहता था। यह शिक्षा व्यवस्था उसे कोल्हू का बैल बनाने पर आमादा थी। अमित तनाव बर्दाश्त न कर सका। अमित अपने में सिमटा रहा। वह यह जान न सका कि उसके साथी भी इसी तरह घुट रहे हैं। उसकी इच्छाओं का गला घोंटा गया था। वह यह नहीं जान सका कि हमारी इच्छाओं को मालिकों ने कैद कर रखा है। काश! अमित यह जानता होता कि अपनी बेचैनी को साझा कर हम इस शिक्षा व्यवस्था के खिलाफ लड़ सकते हैं और लड़ते हुए गणित तो क्या जिन्दगी के हर पहलू को समझ सकते हैं। वह अकेला अपनी लड़ाई लड़ता रहा और आखिरकार थक गया। और उसकी हत्या हो गयी। काश अमित समझ पाता कि

"मरने का एक और भी सलीका होता है
भरे ट्रैफिक के बीचों-बीच लेट जाना
और जाम कर देना
वक्त का बोझिल पहिया।" (पाश)

इंकलाब के लिए जरूरी है एक इंकलाबी पार्टी
और इंकलाबी पार्टी के लिए जरूरी है एक इंकलाबी अखबार
नई समाजवादी क्रान्ति का उद्घोषक

बिगुल

सम्पादकीय कार्यालय : **69, बाबा का पुरवा, पेपरमिल रोड, निशातगंज, लखनऊ**
email : bigulakhbar@hotmail.com
मूल्य : तीन रुपए, वार्षिक : 36 रुपए (डाकव्यय सहित 40/-)

आह्वान यहां से प्राप्त करें

उत्तर प्रदेश ■ जनचेतना, जाफरा बाजार, **गोरखपुर** ■ विजय इन्फार्मेशन सेण्टर, कचहरी बस स्टेशन, **गोरखपुर** ■ विश्वनाथ मिश्र, नेशनल पी.जी. कालेज, बड़हलगंज, **गोरखपुर** ■ जनचेतना स्टाल, कॉफी हाउस के पास, हजरतगंज, **लखनऊ** (शाम 5 से 8.30 तक) ■ ओमप्रकाश, 69, बाबा का पुरवा (पुराना), पेपरमिल रोड, निशातगंज, **लखनऊ** ■ राहुल फाउण्डेशन, 3/274 विश्वास खण्ड, गोमतीनगर, **लखनऊ** ■ विमल कुमार, बुक स्टाल, नीलगिरि काम्प्लेक्स के सामने, इंदिरानगर, **लखनऊ** ■ कृष्णगोविन्द सिंह, एस.एच. 1/49, ए-24, प्रथम तल, जयनगर कालोनी, गिलट बाजार, **वाराणसी** ■ प्रोग्रेसिव बुक सेण्टर, विश्वनाथ मन्दिर गेट, बी.एच.यू. परिसर, **वाराणसी** ■ शहीद पुस्तकालय, द्वारा डा. दूधनाथ, जनगण होम्यो सेवासदन, मर्यादपुर, **मऊ** ■ राजेन्द्र प्रसाद, रेनु मेडिकल की गली, मुख्य सड़क, रेणुकूट, **सोनभद्र**

उत्तरांचल ■ रविन्द्र कुमार, भारतीय जीवन बीमा निगम, **पन्तनगर** (ऊधमसिंहनगर) ■ अविनाश श्रीवास्तव, 87, पन्त भवन, **पन्तनगर विश्वविद्यालय, ऊधमसिंहनगर** ■ रामपाल सिंह, भारतीय जीवन बीमा निगम, **रुद्रपुर** (ऊधमसिंहनगर) ■ प्रो. प्यारेलाल, 139, फूलबाग कालोनी, **पन्तनगर**

दिल्ली ■ सत्यम वर्मा, 81, समाचार अपार्टमेंट, मयूर विहार-फेज एक, **दिल्ली-91** ■ अभिनव सिन्हा, बी.ए.ऑनर्स-III (इतिहास), रामजस कालेज, दिल्ली वि.वि. ■ गीता बुक सेंटर, **जे.एन.यू.** ■ बुक कार्नर, श्रीराम सेंटर, **मंडी हाउस** ■ पुस्तक मंडप, कला संकाय, **दिल्ली विश्वविद्यालय** ■ नई किरण पुस्तक भण्डार, 56, हरकेश नगर, **ओखला, दिल्ली**

हरियाणा ■ नरभिंडर सिंह, शहीद भगतसिंह विचार मंच, हरियाणा, ग्रा./पो.**संतनगर**, जिला **सिरसा** ■ पंकज, प्लाट नं. 33, सेक्टर 15, सोनीपत

बिहार ■ पीपुल्स बुक हाउस, पटना कालेज के सामने, **पटना** ■ समकालीन प्रकाशन (प्रा. लि.), पुस्तक बिक्री केन्द्र, आजाद मार्केट, पीरमुहानी, **पटना**

बंगाल ■ बुक मार्क, 6, बंकिम चटर्जी स्ट्रीट, **कलकत्ता** ■ जनार्दन थापा, लुकसान बाजार, पो. करेन, जि. **जलपाईगुड़ी** ■ सी.पी. सरोज, सनराइज स्कूल, छोटा अदलपुर, सेमलबाड़ी, **दार्जीलिंग** ■ राकेश गोरखा, सरस्वती पुस्तक मन्दिर, प्रधाननगर, **सिलीगुड़ी**

मध्य प्रदेश ■ चिंचोलकर बुक हाउस बस स्टैण्ड, जगदलपुर, बस्तर ■ विकल्प सांस्कृतिक मोर्चा, 22 स्वास्तिक काम्प्लेक्स, रसेल चौक, जबलपुर

महाराष्ट्र ■ पीपुल्स बुक हाउस, 15, कावसजी पटेल स्ट्रीट, फोर्ट, **मुम्बई**

राजस्थान ■ कविता, द्वारा योगेश कुमार, 94, मोहननगर (त्रिवेणीनगर), गोपालपुरा बाईपास, **जयपुर**

असम ■ शर्मा बुक स्टाल, थाना रोड, चराली, **तिनसुकिया**

नेपाल ■ विश्व नेपाली पुस्तक सदन, श्रवण पथ, बुटवल, **रुपनदेई**